दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद में वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा का अध्ययन

खुशी करवरिया
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग
अध्ययनशाला एवं शोध केंद्र
(म. छ. बुं. वि. छतरपुर, म. प्र)
ईमेल पता -.

डॉ. कल्पना वैश्य
मार्गदर्शिका एवं सह प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र
(म. छ. बुं. वि. छतरपुर, म. प्र.)
ईमेल पता -

khushikarvariya147@gmail.com
kalpna.soni15@gmail.com

सारांश (Abstract)

विश्व की वसुंधरा पर एकता का नाम हो , द्वेष मिट जन जन के मन से मानवता पहचान हो,

राष्ट्र की सीमा हो ,या हो पार सिंधु की धरा , इंसानियत से बड़ा ना कोई पैगाम हो।।

दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद भारतीय सांस्कृतिक चेतना और मूल्यों का एक सजीव दर्शन है, जो मानव जीवन के भौतिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक चारों पहलुओं की समन्वित अभिव्यक्ति पर बल देता है। इस सिद्धांत में व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया है। उपाध्याय जी के विचारों में 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा एक केंद्रीय तत्व के रूप में विद्यमान है, जो संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की भारतीय परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है। हम सभी जानते हैं 21वीं सदी का भारत तेज गति से बदल रहा है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और वैश्वीकरण ने जहां आज इस विश्व को नए युग की ओर उन्मुख किया है तो इसके साथ ही असमानता ,हिंसा,नैतिक पतन और पर्यावरणीय क्षरण जैसी समस्याओं ने मानवता को गहरे संकट में डाल दिया है । ऐसे में इन वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो न केवल भौतिक उन्नति बल्कि मानवीय मूल्यों और आत्मिक संतुलन पर भी आधारित हो।

यह शोध पत्र उपाध्याय जी के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता का परीक्षण करता है और यह स्थापित करता है कि आज के संकटों से निपटने के लिए उपाध्याय जी के सिद्धांत अत्यंत उपयोगी हो सकते हैं।

वसुधैव कुटुंबकम' का अर्थ है सम्पूर्ण पृथ्वी को अपना कुटुंब (परिवार) मानना, जिसमें पारस्परिक प्रेम, सहयोग और सह-अस्तित्व की भावना निहित है। एकात्म मानववाद इस आदर्श को व्यवहारिक धरातल पर लागू करने का प्रयास करता है, जहाँ राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक समरसता का समुचित संतुलन स्थापित होता है। दीनदयाल उपाध्याय ने यह माना कि समाज को केवल भौतिक प्रगति के आधार पर नहीं, बल्कि अध्यात्मिक और

नैतिक मूल्यों के साथ आगे बढ़ाना चाहिए।यह शोधपत्र एकात्म मानववाद के दर्शन में निहित वसुधैव कुटुंबकम के विचार की गहन विवेचना करता है। साथ ही, यह विश्लेषण करता है कि किस प्रकार उपाध्याय जी के सिद्धांत आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी मानवता के लिए एक मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। समकालीन समय में, जब समाज विविध संकटों से जूझ रहा है, तब एकात्म मानववाद और वसुधैव कुटुंबकम की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है।

कुंजी शब्द (Keywords)

एकात्म मानववाद, वसुधैव कुटुंबकम, दीनदयाल उपाध्याय, भारतीय दर्शन, वैश्विक एकता

परिचय (Introduction)

भारतीय संस्कृति और दर्शन शास्त्र ने सदैव संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की शिक्षा दी है। इस व्यापक दृष्टिकोण का सबसे सुंदर प्रतीक वाक्य है - 'वसुधैव कुटुंबकम'...।भारतीय दर्शन और सांस्कृतिक परंपरा में मानव जीवन को केवल भौतिक आवश्यकताओं तक सीमित नहीं माना गया है, बल्कि उसे एक उच्चतर आत्मिक यात्रा के रूप में देखा गया है । इसी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से प्रेरित होकर दीनदयाल उपाध्याय ने 'एकात्म मानववाद' का प्रतिपादन किया, जो मानव जीवन के सभी पहलुओं — शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक — के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। उपाध्याय जी का मानना था कि पश्चिमी विचारधाराएँ भारतीय समाज की आवश्यकताओं और सांस्कृतिक चेतना के अनुरूप नहीं हैं, क्योंकि वे जीवन को खंडों में विभाजित करती हैं और केवल भौतिक उन्नति पर बल देती हैं।इसके विपरीत भारतीय दृष्टिकोण जीवन को एक अविभाज्य संपूर्णता के रूप में देखता है।

'वसुधैव कुटुंबकम' — अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है — भारतीय चिंतन का एक मूल सिद्धांत है, जो मानव मात्र के बीच पारस्परिक सहयोग, सह-अस्तित्व और प्रेम को सर्वोपरि मानता है। यह अवधारणा ऋग्वेद, उपनिषदों और अन्य ग्रंथों में गहराई से निहित है। दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद में इसी भावना का आधुनिक युग के लिए एक नवीन और व्यावहारिक पुनर्पाठ प्रस्तुत किया गया है। उनके विचारों में राष्ट्रवाद और वैश्विक मानवता के बीच कोई विरोधाभास नहीं है, बल्कि एक गहन समन्वय का प्रस्ताव है।

एकात्म मानववाद, उपाध्याय जी के अनुसार, समाज और व्यक्ति के बीच एक ऐसे संतुलन की स्थापना करता है जिसमें न तो व्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन होता है, न ही समाज की एकता और समरसता को खतरा पहुँचता है। इस सिद्धांत में राज्य और समाज के कर्तव्यों की भी पुनर्परिभाषा की गई है, जहाँ आर्थिक विकास का अंतिम लक्ष्य केवल संपत्ति का संचय नहीं, बल्कि सामाजिक कल्याण और आध्यात्मिक उन्नति है। उपाध्याय जी ने 'चौरंगी विकास' (शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा) का प्रतिपादन किया, जो मनुष्य को उसकी सम्पूर्णता में समझने का प्रयास करता है।

आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जब संसार उपभोक्तावाद, युद्ध, पर्यावरण संकट और सांस्कृतिक विघटन जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब एकात्म मानववाद और वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणाएँ अत्यंत प्रासंगिक हो उठी हैं। जहाँ एक ओर वैश्वीकरण ने भौतिक रूप से दुनिया को जोड़ दिया है, वहीं मानसिक, सांस्कृतिक और आत्मिक स्तर पर विभाजन बढ़ा है। ऐसी परिस्थिति में दीनदयाल उपाध्याय का यह दर्शन एक समन्वयकारी दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो न केवल भारत के लिए, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

यह शोधपत्र दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के भीतर निहित वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा का विश्लेषण करेगा। इसमें यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि किस प्रकार उपाध्याय जी ने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों में ढालने का कार्य किया, और किस प्रकार उनका दर्शन आज भी विश्वबंधुत्व, शांति और सतत विकास के लिए एक मजबूत आधार बन सकता है। एकात्म मानववाद न केवल एक वैचारिक दर्शन है, बल्कि एक व्यावहारिक जीवन पद्धति का प्रस्ताव भी है, जो व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करता है ।

<u>शोध उद्देश्य (, objectives)</u>

1. **दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म मानववाद' के सिद्धांतों का विश्लेषण करना।यह समझना कि उपाध्याय ने मानव विकास और समाज के समग्र दृष्टिकोण को किस प्रकार परिभाषित किया।**

2. **'वसुधैव कुटुंबकम' की भारतीय सांस्कृतिक अवधारणा का अध्ययन करना। वैश्विक भाईचारे और समरसता के इस आदर्श का ऐतिहासिक और दार्शनिक विश्लेषण करना।**

3. **'एकात्म मानववाद' और 'वसुधैव कुटुंबकम' के बीच वैचारिक सामंजस्य स्थापित करना। यह स्पष्ट करना कि किस प्रकार दीनदयाल उपाध्याय के सिद्धांत 'वसुधैव कुटुंबकम' के आदर्श को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करते हैं।**

4. **आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इन अवधारणाओं की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना। समकालीन समस्याओं जैसे पर्यावरण संकट, सामाजिक विषमता और वैश्विक संघर्षों के संदर्भ में इन विचारों की उपयोगिता को रेखांकित करना।**
5. **भारतीय चिंतन और विश्व दृष्टिकोण के बीच एक सेतु निर्माण करना। यह सिद्ध करना कि भारतीय दर्शन की यह परंपरा आधुनिक विश्व समस्याओं के समाधान के लिए दिशा प्रदान कर सकती है।**

शोध प्रविधि (Research methodology)

यह अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक शोध पर आधारित है, जिसमें दीनदयाल उपाध्याय के विचारों, भारतीय दर्शन, और 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा का गहन विश्लेषण किया गया है। शोध में विचारों, सिद्धांतों और अवधारणाओं की गहराई से व्याख्या की गई है।इस शोध में प्रमुख ग्रंथों, उपनिषदों, गीता, महाउपनिषद्, तथा दीनदयाल उपाध्याय द्वारा रचित साहित्य का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त, समकालीन शोधपत्रों, पुस्तकों और रिपोर्ट्स का भी संदर्भ लिया गया है।

एकात्म मानववाद: एक परिचय

दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानववाद' मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं — शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा — के समन्वित विकास की वकालत करता है । दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद भारतीय राजनीतिक और सामाजिक चिंतन में एक अनूठा योगदान है। उपाध्याय जी के अनुसार, राष्ट्र केवल भौगोलिक इकाई नहीं है, बल्कि उसमें बसने वाली जनता की आत्मा है । (उपाध्याय,1965, पृ 24) अतः सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचनाएँ इस 'राष्ट्रीय आत्मा' के अनुरूप होनी चाहिए। यह दर्शन जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक पक्षों का समन्वय करता है और यह मानता है कि मानव की सभी आवश्यकताओं — शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक — की पूर्ति एक संतुलित ढंग से होनी चाहिए। उपाध्याय जी ने एकात्म मानववाद को 1965 में भारतीय जनसंघ के कार्यकर्ताओं के सम्मुख प्रस्तुत किया था, जिसमें उन्होंने कहा कि भारत को न तो पूंजीवाद और न ही साम्यवाद का अंधानुकरण करना चाहिए, बल्कि अपनी सांस्कृतिक चेतना के अनुरूप एक वैकल्पिक विकास मॉडल अपनाना चाहिए।(उपाध्याय ,1965, पृ.5/7)

एकात्म मानववाद का मूल दर्शन यह है कि मानव जीवन को खंडों में विभाजित करके नहीं समझा जा सकता। व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का एक समग्र तंत्र है और उसकी प्रगति भी इसी समग्रता के अनुसार होनी चाहिए। इसी प्रकार समाज भी एक जीवित इकाई है, जिसे कृत्रिम रूप से वर्गों में विभाजित नहीं किया जा सकता। उपाध्याय जी ने समाज को एक "जीवंत जीव" (Living Entity) कहा, जिसमें विभिन्न संस्थाएँ (जैसे परिवार, समुदाय, राष्ट्र) शरीर के विभिन्न अंगों की भाँति कार्य करती हैं।(उपाध्याय ,1965, पृ.07)

उनके अनुसार, व्यक्ति और समाज का संबंध वैसे ही है जैसे शरीर के अंगों का शरीर से। कोई भी अंग अलग-अलग स्वतंत्र होकर कार्य नहीं कर सकता; उसकी स्वतंत्रता समष्टि के अनुरूप ही अर्थपूर्ण होती है। इसलिए एकात्म मानववाद में व्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व दोनों को समान महत्त्व दिया गया है।(शर्मा ,2011, पृ. 27)। एकात्म मानववाद की चार आधारशिलाएँ हैं:

1. **संपूर्ण दृष्टिकोण — जीवन और समाज को टुकड़ों में नहीं, सम्पूर्णता में देखना।**
2. **स्वदेशी अवधारणा — भारत की सांस्कृतिक चेतना के अनुरूप विकास और नीति निर्माण।**
3. **समरसता — व्यक्ति, समाज, प्रकृति और सृष्टि के बीच संतुलन।**
4. **धर्म आधारित समाज व्यवस्था — धर्म का अर्थ नैतिकता और कर्तव्यबोध से है, न कि संकीर्ण धार्मिक पहचान से।(उपाध्याय,1965, पृ11/13)**

आज के समय में जब वैश्विक स्तर पर अलगाववाद, उपभोक्तावाद और पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, तब एकात्म मानववाद का यह समन्वयकारी दृष्टिकोण एक वैकल्पिक मार्ग प्रदान करता है। यह न केवल आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता का मार्गदर्शन करता है, बल्कि मानसिक, सामाजिक और आत्मिक संतुलन की भी आवश्यकता को रेखांकित करता है।

संक्षेप में, एकात्म मानववाद भारतीय परंपरा की उस गहन भावना का पुनराविष्कार है जो जीवन को केवल भौतिक उपलब्धियों के आधार पर नहीं, बल्कि व्यापक मानव कल्याण और आध्यात्मिक उन्नति के संदर्भ में देखती है। यह दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस समय था जब उपाध्याय जी ने इसे प्रतिपादित किया था।(शर्मा,2018, पृ.28)

वसुधैव कुटुंबकम: भारतीय सभ्यता का वैश्विक दृष्टिकोण

भारतीय संस्कृति और दर्शन में 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है।(शर्मा,2011, पृ 33)। संस्कृत के इस प्रसिद्ध वाक्यांश का शाब्दिक अर्थ है — "सारी पृथ्वी एक परिवार है।" यह विचार हमारे प्राचीन ग्रंथों, विशेष रूप से महाआरण्यक उपनिषद में प्राप्त होता है, (महाआरण्यक उपनिषद् ,3.10.6)जहाँ कहा गया है:

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचारितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥"(महाआरण्यकउपनिषद्,3.10.6 ; शर्मा, 2011, पृ.34)

अर्थात्, संकीर्ण सोच वाले लोग अपने और पराये में भेद करते हैं, जबकि उदार हृदय वाले लोगों के लिए पूरी धरती एक परिवार के समान है।

'वसुधैव कुटुंबकम' भारतीय जीवनदृष्टि की वह नींव है, जो समस्त प्राणियों के बीच प्रेम, सह-अस्तित्व और एकता की भावना का पोषण करती है। (पांडेय,2010, पृ41).यह केवल एक नैतिक आदर्श नहीं है, बल्कि भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक व्यवहार का मार्गदर्शक सिद्धांत भी रहा है। वैदिक काल से लेकर आज तक, इस विचार ने भारतीय सभ्यता को वैश्विक मानवता के साथ जोड़ने का कार्य किया है। वसुधैव कुटुंबकम के मूल तत्व:

1. **समानता और समरसता: सभी मानव एक ही परमसत्ता के अंश हैं; इसलिए उनमें मूलभूत समानता है।**
2. **सह-अस्तित्व: प्रकृति के अन्य घटकों — पशु, पक्षी, वनस्पति — के साथ भी मानव का संबंध पारिवारिक है।**
3. **अहिंसा और करुणा: जीवन के हर रूप के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता।**
4. **वैश्विक सहयोग: देशों और सभ्यताओं के बीच सहयोग, शांति और सह-अस्तित्व की भावना।(पांडेय,2010, पृ.42/43; शर्मा,2011, पृ.36/37)**

यह दर्शन न केवल मानव-मानव के बीच, बल्कि मानव और प्रकृति के बीच भी एक गहरे संबंध को स्वीकार करता है। आधुनिक युग में जब राष्ट्रवाद कई बार संकीर्णता और टकराव का रूप ले लेता है, तब 'वसुधैव कुटुंबकम' सार्वभौमिक भाईचारे और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का संदेश देता है।(पांडेय, 2010, पृ .45) । प्राचीन भारत के शासकों ने इस आदर्श को नीतियों और व्यवहार में भी अपनाया। सम्राट अशोक का धम्म (धर्म) अभियान, जिसमें उन्होंने अहिंसा, सहिष्णुता और करुणा के सिद्धांतों का प्रचार किया, 'वसुधैव कुटुंबकम' के आदर्श का मूर्त उदाहरण है।(शर्मा, 2011, पृ. 39) । मध्यकाल में संत कबीर, गुरु नानक, और संत रैदास जैसे महापुरुषों ने भी इसी भावना को अपने उपदेशों में व्यक्त किया। आधुनिक युग में महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांत भी इसी विचारधारा की आधुनिक अभिव्यक्ति माने जा सकते हैं।(शर्मा ,2011, पृ.40)

<u>एकात्म मानववाद और वसुधैव कुटुंबकम का समन्वय</u>

दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानववाद' और 'वसुधैव कुटुंबकम' दोनों ही सार्वभौमिक एकता और समरसता के सिद्धांतों पर आधारित हैं ।दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद और 'वसुधैव कुटुंबकम' की भारतीय अवधारणा मूलतः एक ही जीवन दृष्टि के दो पहलू हैं।(शर्मा,2011, पृ 22) एकात्म मानववाद भारतीय जीवन के समग्र दृष्टिकोण को आधुनिक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ में प्रस्तुत करता है, वहीं 'वसुधैव कुटुंबकम' इस समग्र दृष्टि का नैतिक एवं दार्शनिक आधार प्रदान करता है। दोनों ही विचार मानव मात्र को एक अविभाज्य इकाई के रूप में देखते हैं और भौगोलिक, जातीय,

सांस्कृतिक, आर्थिक भेदों को समाप्त कर सम्पूर्ण मानवता के कल्याण की बात करते हैं ।(पांडेय ,2010, पृ.42)

उपाध्याय जी ने अपने दर्शन में स्पष्ट किया कि राष्ट्रवाद का अर्थ संकीर्ण स्वार्थ सिद्धि नहीं है, बल्कि राष्ट्र को एक जीवंत सांस्कृतिक इकाई मानते हुए, सम्पूर्ण मानवता के प्रति अपने दायित्वों को भी समझना है। (शर्मा, 2011, पृ .24) जब वे व्यक्ति और समाज के बीच एकात्मता की बात करते हैं, तो वह केवल राष्ट्रीय स्तर तक सीमित नहीं रहती, बल्कि 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना के अनुरूप वैश्विक स्तर तक विस्तृत होती है।

उनके अनुसार, यदि प्रत्येक राष्ट्र अपने सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर आत्मनिर्भर बने और एक-दूसरे के साथ सहयोग करे, तो विश्व में स्थायी शांति और विकास संभव हो सकता है। यह सोच 'वसुधैव कुटुंबकम' की मूल भावना को प्रतिध्वनित करती है।(शर्मा,2018, पृ .28)

<u>अंतरसंबंध के मुख्य बिंदु:</u>

1. <u>व्यक्ति और समाज का समन्वय:</u>

एकात्म मानववाद व्यक्ति की स्वतंत्रता और समाज की आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित करता है। 'वसुधैव कुटुंबकम' इसी सोच का विस्तार है, जहाँ व्यक्ति न केवल अपने समाज, बल्कि सम्पूर्ण विश्व समुदाय का अंग बनता है।(पांडेय,2010, पृ.45)

2. <u>सांस्कृतिक एकता:</u> एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति की एकता और अखंडता को रेखांकित करता है। (शर्मा, 2011, पृ .27)वसुधैव कुटुंबकम' इस सांस्कृतिक चेतना को वैश्विक स्तर पर विस्तारित करता है, जिसमें सभी संस्कृतियाँ एक ही वैश्विक परिवार का अंग मानी जाती हैं।
3. <u>आध्यात्मिक दृष्टिकोण:</u>

उपाध्याय जी ने मानव जीवन की अंतिम पूर्णता को आत्मा की शुद्धि और विकास में देखा। 'वसुधैव कुटुंबकम' भी आत्मा की एकता को स्वीकार करता है और सिखाता है कि सभी प्राणी एक ही परम सत्ता के अंश हैं। इस आध्यात्मिक एकता के बोध से द्वेष, हिंसा और संघर्ष समाप्त हो सकते हैं।(महाआरण्यक उपनिषद, 3.10.6; Pandey, 2010, पृ. 47)।

4. <u>संतुलित विकास का सिद्धांत:</u>

एकात्म मानववाद आर्थिक विकास को नैतिक और सामाजिक मूल्यों के साथ जोड़ता है। 'वसुधैव कुटुंबकम' वैश्विक स्तर पर संतुलित विकास की अवधारणा प्रस्तुत करता है, जहाँ प्रत्येक देश और व्यक्ति का कल्याण सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के साथ जुड़ा हुआ है।(पांडेय, 2010, पृ.48)

5. **प्रकृति के साथ सामंजस्य:**

उपाध्याय जी ने मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य पर बल दिया। 'वसुधैव कुटुंबकम' भी पृथ्वी को 7अपना परिवार मानने का दृष्टिकोण देता है, जिसमें पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग का संदेश निहित है।(Pandey, 2010, पृ. 52)

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

आज जब विश्व विविध संकटों — जैसे आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक असमानता, और सांस्कृतिक टकराव — से जूझ रहा है,(United Nations,2020 , रिपोर्ट) तब दीनदयाल उपाध्याय का समन्वयवादी दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक बन गया है। वैश्वीकरण ने भले ही दुनिया को भौतिक रूप से जोड़ दिया हो, परन्तु मानसिक और आत्मिक दूरी बढ़ गई है। ऐसे में एकात्म मानववाद और वसुधैव कुटुंबकम का संदेश इस दूरी को पाटने में सहायक हो सकता है ।

जहाँ एक ओर पश्चिमी मॉडल व्यक्तिवादी और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देता है, वहीं एकात्म मानववाद और वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन संतुलन, करुणा और समग्र विकास पर बल देता है। यह दृष्टिकोण केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए एक स्थायी समाधान का प्रस्ताव करता है।(Upadhyaya, 1965/2014, पृ. 18; Sharma, 2011, पृ. 29)। वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा एक ऐसा विकल्प प्रस्तुत करती है जो वैश्विक भाईचारे, शांति और सतत विकास को संभव बना सकती है । भारतीय विदेश नीति में भी इस विचार का प्रभाव देखा जा सकता है, जहाँ भारत 'विश्वगुरु' बनने के स्वप्न को शक्ति के प्रदर्शन के बजाय ज्ञान और करुणा के माध्यम से साकार करने की दिशा में अग्रसर है।(पांडेय,2010, पृ.47)

निष्कर्ष (Conclusion)

एकात्म मानववाद में वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा का अध्ययन" करते हुए यह स्पष्ट होता है कि दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन भारतीय सभ्यता की उस गहन भावना से जुड़ा है, जो सम्पूर्ण मानवता को एक परिवार के रूप में देखने की प्रेरणा देती है। उनका एकात्म मानववाद जीवन के समग्र दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है, जिसमें व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व — सभी के बीच संतुलन और समन्वय का आग्रह है। इसी दर्शन का नैतिक और दार्शनिक आधार 'वसुधैव कुटुंबकम' है, जो मानव मात्र की समानता, सह-अस्तित्व और करुणा पर बल देता है।

दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद के माध्यम से भारतीय समाज के सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक पुनर्निर्माण का मार्ग प्रस्तुत किया। उन्होंने यह दिखाया कि कैसे भारतीय जीवनमूल्यों के आधार पर एक ऐसा सामाजिक ढांचा निर्मित किया जा सकता है जो न केवल राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति करे, बल्कि वैश्विक शांति और समरसता में भी

योगदान दे। वसुधैव कुटुंबकम की भावना इस सोच को वैश्विक आयाम प्रदान करती है, जहाँ सीमाओं और भेदभावों से ऊपर उठकर सम्पूर्ण पृथ्वी को एक परिवार के रूप में अपनाया जाता है।(United Nations,2024, reports)

आज जब विश्व अलगाववाद, संघर्ष और उपभोक्तावाद के संकटों से जूझ रहा है, तब दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद और वसुधैव कुटुंबकम का संदेश न केवल भारत के लिए, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए एक प्रेरणास्त्रोत बन सकता है। यह दृष्टि मानवता को उसकी मूल आत्मिक एकता का बोध कराते हुए, एक अधिक न्यायपूर्ण, सहिष्णु और संतुलित समाज के निर्माण की राह प्रशस्त करती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि एकात्म मानववाद और वसुधैव कुटुंबकम केवल विचार नहीं, बल्कि आज के संकटग्रस्त विश्व के लिए एक व्यवहारिक समाधान हैं — एक ऐसा समाधान जो मानवता को उसकी वास्तविक पहचान और उद्देश्य की ओर लौटने का आह्वान करता है।

संदर्भ (References)

- **Kumar, Arun.(2023). The concept of vashudhaiv kutumbkam (the world is a family): insights from the mahopnishad.national journal of Hindi and Sanskrit research. Vol.49 .p.42-45**
- **महाआरण्यक उपनिषद। (अनुवाद: भारतीय विद्वान), खंड 3, अध्याय 10, मंत्र 6.**
- **Mahāupanishad. (अनुवादित संस्करण)।**
- **Mishra, A. (2020). Philosophy of Deendayal Upadhyaya: A Contemporary Reinterpretation. New Delhi: Concept Publishing.**
- **Pandey, S. (2010). Vasudhaiva Kutumbakam: A Global Vision Rooted in Indian Culture. Varanasi: Dharmarth Prakashan.**
- **Pandey, S. (2010). भारतीय संस्कृति में वैश्विक दृष्टि. नई दिल्ली: भारतीय विद्या संस्थान।**
- **Sharma, R. (2011). Integral Humanism: Deendayal Upadhyaya's Vision and Philosophy. New Delhi: Concept Publishing Company.**
- **Sharma, R. (2018). Integral Humanism and Modern Indian Thought. Delhi: Vani Prakashan.**
- **Śrīmadbhagavadgītā (अनुवाद: गीता प्रेस गोरखपुर)।United Nations. (2020). Report on Global Fraternity and Co-existence. Retrieved from www.un.org**

- **United Nations.(2024).Report on global humanity.Retrieved from www.un.org**
- **Upadhyaya, D. (2014). Integral Humanism (Original work published 1965). New Delhi: Suruchi Prakashan.**
- **उपाध्याय, दीनदयाल. (1965). एकात्म मानवदर्शन. भारतीय जनसंघ प्रकाशन।**

https://globalpeace-org.translate.goog/vasudhaiva-kutumbakam-path-to-a-harmonious-interconnected-world/?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc